@ पशुधन संरक्षण

वर्ष : 2 ● अंक 6 ● जून–2022

अब बीमार पशुओं की रोग निदान जांचें भी होगी ब्लॉक स्तर पर

विभाग ने प्रत्येक पंचायत समिति मुख्यालय पर ब्लॉक वेटेरीनरी हेल्थ ऑफिसर व प्राथमिक पशु रोग निदान प्रयोगशाला स्थापित करने के आदेश जारी किए हैं। यह जानकारी देते हुए पशुपालन विभाग के मंत्री श्री लालचन्द कटारिया ने बताया कि पंचायत समिति स्तरीय पशु चिकित्सा संस्थाएं सुदृढ़ होने से अधिकाधिक पशुपालकों लाभ मिलेगा।

उन्होंने बताया कि अब जहां प्रदेश के प्रत्येक पंचायत समिति मुख्यालय पर राजकीय प्रथम श्रेणी पशु चिकित्सालय के साथ प्राथमिक रोग निदान प्रयोगशाला की स्थापना होगी, वहीं अब बीसीएमओ की तर्ज पर हर ब्लॉक (पंचायत समिति मुख्यालय) पर बीवीएचओ ऑफिस (ब्लॉक वेटरनरी हैल्थ आफिस) कार्यालय खोलने के आदेश जारी किए हैं। जिसके लिए पंचायत समिति स्तर पर राजकीय प्रथम श्रेणी पशु चिकित्सालय होना आवश्यक है। जिन पंचायत समिति मुख्यालय पर राजकीय प्रथम श्रेणी पशु चिकित्सालय नहीं था, वहां इस निर्णय से सीधे ही राजकीय प्रथम श्रेणी पशु चिकित्सालय खुल गया। साथ ही जिन पंचायत समिति मुख्यालयों पर अब तक पशु चिकित्सालय या उपकेंद्र थे, वे भी अब सीधे प्रथम श्रेणी पशु चिकित्सालय में क्रमोन्नत हो गए।

होगी प्रभावी मॉनिटरिंग

श्री कटारिया ने बताया कि पंचायत समिति मुख्यालय पर बीवीएचओ कार्यालय खुलने से ब्लाक के पशु चिकित्सालयों, पशु चिकित्सा उपकेंद्रों का प्रभावी निरीक्षण व मॉनिटरिंग हो सकेगी, अब तक यह जिम्मा अकेले जिला संयुक्त निदेशक के पास था। इस आदेश के तहत प्रदेश में जिन प्रथम श्रेणी पशु चिकित्सालय के लिए पर्याप्त भवन नहीं है, अथवा जहां अतिरिक्त कक्ष की आवश्यकता है, वहां कक्ष के निर्माण के लिए 8 लाख रुपये की मंजूरी भी दी गई है।

बीमार पशुओं के खून जांच के साथ ही एक्स–रे व अन्य कार्य के लिए पूर्व में जिला मुख्यालय में ही पशु रोग निदानशाला संचालित होती थी। राज्य सरकार के आदेशानुसार अब हर ब्लॉक पर प्राथमिक पशु रोग निदान प्रयोगशाला की भी स्वीकृति जारी की गई है। प्रयोगशाला के लिए प्रत्येक केंद्र को एक कम्प्यूटर ऑपरेटर (मैन विद मशीन), एक लैब टैक्नीशियन व आवश्यकता अनुसार किराए पर वाहन लेने की स्वीकृति भी दी गई है। प्राथमिक पशु रोग निदान प्रयोगशाला खुलने से अब पशु रोग निदान का कार्य हर ब्लाक मुख्यालय पर आसान और त्वरित गति से हो पाएगा। अब हर छोटी जांच के लिए जिला मुख्यालय स्थित जिला रोग निदान प्रयोगशाला का रुख नहीं करना पड़ेगा।

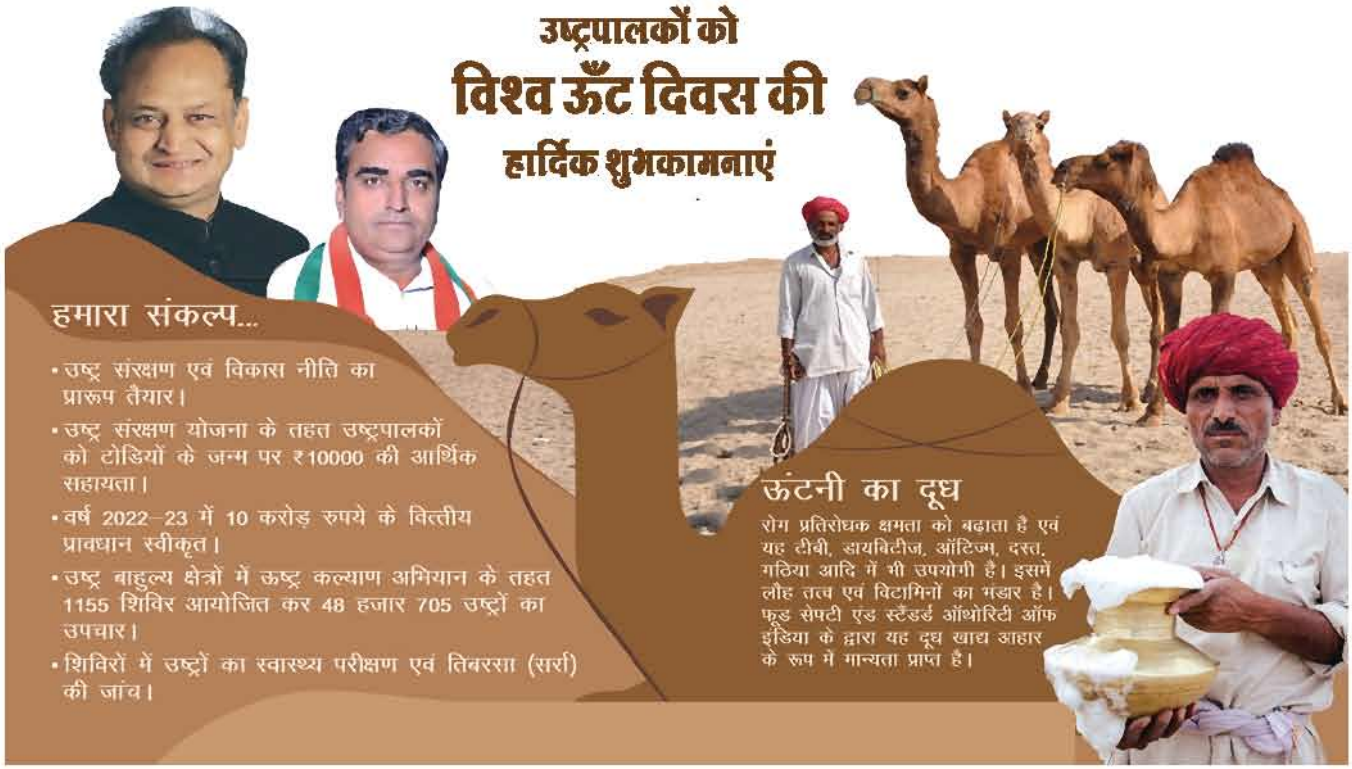

विश्व ऊँट दिवस पर विशेष

क्या आप जानते है ?

- ऊँट के प्राकृतिक आवास वाले देशों में 22 जून को विश्व ऊँट दिवस मनाया जाता है।
- रेगिस्तान का जहाज ऊँट राजस्थान का राज्य पशु है। इस सम्बन्ध में राज्य सरकार ने 19 सितंबर, 2014 को अधिसूचना जारी कर ऊँट को राज्य पशु घोषित किया गया था।
- राज्य में ऊंटों की पांच प्रकार की नस्लें पायी जाती है। जिसमें खास तौर पर जैसलमेरी, बीकानेरी, कच्छी, मेवाड़ी एवं जालौरी नस्लें है।
- देश के कुल ऊँटों में से 84 प्रतिशत ऊँट राजस्थान में पाये जाते हैं।
- बीकानेर रियासत के महाराजा गंगा सिंह ने सन् 1889 में गंगा रिसाला नामक ऊँट सवार फौज तैयार की थी, जिसने प्रथम व द्वितीय विश्व युद्ध में भाग लिया था।
- ऊँटनी का दूध रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है।
- ऊँटनी का दूध टीबी, डायबिटीज, ऑटिज्म, दस्त, गठिया आदि के निदान में उपयोगी है।
- ऊँटनी का दूध लौह तत्व एवं विटामिनों का भंडार है।
- ऊँटनी के दूध को फूड सेफ्टी एंड स्टैंडर्ड ऑथोरिटी ऑफ इंडिया ने इसे खाद्य आहार के रूप में मान्यता।

ऊँटनी के दूध में औषधीय गुण

- ऊँटनी के दूध का भारत व अन्य देशों में कई बीमारियों के लिए उपयोग किया जाता है। भारतीय परिस्थितियों में ऊँटनी का दूध जलोदर (Dropsy), पीलिया (Jaundice), तिल्ली (Spleen), तपेदिक (Tuberculosis), दमा (Asthma) तथा एनिमिया (Anaemia) जैसी बीमारियों में उपयोगी माना गया है। ऊँटनी का दूध यकृत, पेट के अल्सर, मधुमेह (Diabetes) व बवासीर बीमारियो मे उपयोगी बताया गया है।
- ऊँटनी के दूध में लाइसोजाइम्स एन्जाईम की मात्रा बहुत अधिक होती है जो क्षय/तपेदिक रोग के जीवाणुओं की वृद्धि को रोकने के कारण ऊँटनी का दूध क्षय रोग मे बहुत लाभकारी है।
- ऊँटनी के दूध में जस्ते की मात्रा अन्य पशुओं की तुलना में अधिक होती है। जो शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाती है।
- ऊँटनी के दूध में सभी प्रकार के विटामिन्स पाये जाते हैं और इनकी मात्रा पोषण पर निर्भर करती है। नियासिन व विटामिन–ई की मात्रा ऊँटनी के दूध में अन्य पशुओं की तुलना में अधिक पाई जाती है।
- ऊँटनी के 1 कि.ग्रा. दूध में विटामिन सी की मात्रा 40 से 50 मिलीग्राम पायी जाती है जो कि अन्य पशुओं की तुलना में तीन गुना अधिक है। ऊँटनी का दूध विटामिन–सी का अच्छा स्त्रोत है। मानव शरीर में विटामिन–सी का संश्लेषण नही होने के कारण इसकी कमी से अनेक रोग पैदा हो सकते हैं ऐसी स्थिति में ऊँटनी के दूध के लगातार सेवन से विटामिन–सी की कमी को दूर किया जा सकता है।
- दूध मे उपस्थित खनिज पदार्थों का पोषण मे अत्यधिक महत्व है यह तत्व दांत व हड्डी के विकास मे सहायक होते हैं। ऊँटनी के दूध में

जस्ते व तांबे की मात्रा गाय के दूध से अधिक होती है। दुध की मुख्य प्रोटीन केसिन है कुल प्रोटीन का 76 से 80 प्रतिशत भाग केसिन का होता है। ऊँटनीं के दूध में पायी जाने वाली केसिन, प्रोटीन का एक अच्छा स्त्रोत है।

- ऊँटनीं का दूध एक अच्छे दस्तावर (Laxative) के रूप में भी काम मे लिया जाता है।
- ऊँटनीं का दूध अल्फा–हाइड्रोक्सी एसिड का एक प्राकृतिक स्त्रोत है जो कि त्वचा के लिए उपयोगी है।
- यह एक उत्तम एंटी ऑक्सीडेन्ट है जो शरीर से विषैले पदार्थों के निकास में सहायक होता हैं।
- इसके अलावा ऊँटनीं के दूध से निर्मित फेस क्रीम को त्वचा की झुर्रियों मे भी लाभकारी माना गया है।
- ऊँटों के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु जोरबीड़ बीकानेर में राष्ट्रीय ऊँट अनुसंधान केन्द्र, स्थापित हैं, जहां ऊँटों को आर्थिक रूप से अधिक उपयोगी बनाये जाने तथा ऊँटनीं के दूध में औषधीय गुणों के लिये शोध व अनुसंधान किये जा रहे हैं।

पशु आहार में हरे चारे का महत्व

पशुपालन व्यवसाय में पशुओं से अधिकतम उत्पादन प्राप्ति हेतु संतुलित आहार का विशेष महत्व है। आहार पर लगभग 70 प्रतिशत व्यय होता है आहार की लागत में कमी कर अधिकतम लाभ अर्जित किया जा सकता है। विशेषकर दलहनी हरा चारा जो पशु की जरूरत के साथ–साथ कुछ हद तक उत्पादकता हेतु पोषक तत्वों की आपूर्ति करता है। कम खर्च पर पशुओं की उत्पादकता बनाए रखने में हरे चारे का विशेष महत्व है। पशुओं की वृद्धि एवं उत्पादन क्षमता बनाए रखने के लिये उन्हे वर्ष भर हरा चारा मिलना चाहिये। हरा चारा पौष्टिकता में उत्तम माना जाता है एवं इसे खिलाने से दाने की बचत होती है।

पशु आहार में हरे चारे का महत्व

- हरा चारा मुलायम एवं स्वादिष्ट होता है।
- इसमें विभिन्न पौष्टिक तत्वों की उपस्थिति पशुओं को स्वस्थ एवं उत्पादकशील बनाए रखती है।
- हरे चारे से पशु को दाने की तुलना में कम खर्च पर पोषक तत्व प्राप्त होते हैं।
- हरा चारा विशेषकर दलहनी चारे में प्रोटीन, कैल्शियम, फॉस्फोरस आदि पर्याप्त मात्रा में होती है।
- हरे चारे में विटामिन 'ए' की प्रचुर मात्रा होती है जो पशु को स्वस्थ रखने एवं संक्रामक रोगो से बचाव में महत्वपूर्ण है। विटामिन 'ए' की कमी पशुओं में बांझपन एवं गर्भपात होने का एक मुख्य कारण है।
- हरे चारे में नमी की मात्रा अधिक होने से शरीर की कई क्रियाएं सुचारू रूप से चलती रहती है।
- उन्नत हरे चारे की किस्मों की बार–बार कटाई से पशुओं को वर्ष पर्यन्त हरा चारा उपलब्ध हो जाता है।
- हरे चारे की अधिकतम पौष्टिक गुणवत्ता बनाये रखने हेतु इन्हें 'साइलेज' या 'हे' के रूप में संरक्षित करके वर्षभर उपयोग में लिया जा सकता है।

चारे की किस्में

फसल का नाम	उन्नत किस्में	भूमि का प्रकार	बुवाई का समय	बीज की दर (कि.ग्रा./हैक्टेयर)	दूरी पंक्ति से पंक्ति (से.मी.)	उर्वरक की मात्रा (कि.ग्रा./हैक्टेयर)		सिंचाई का अंतराल (दिनों में)	बुवाई के बाद कटाई का समय (दिनों में)	हरे चारे की उपज (टन /हैक्टेयर/वर्ष
						बुवाई से पहले	खड़ी फसल मे			
बरसीम	मस्कावी वरदान, पूसा जाइन्ट बुन्देल बरसीम–2 (जे. एच.बी.–146)	मटियार, दोमट	15 अक्टूबर से 15 नवम्बर	25–30	—	सड़ी हुई गोबर खाद 15–20 टन नत्रजन–20 फास्फोरस–60 पोटाश–30	—	2–3 सिंचाई 7–10 सर्दियों में 15–20 बसंत ऋतु में 10–12	प्रथम 40–45 तत्पश्चात 25–28 अतंराल पर	80–100
रिजका	आनन्द 2 आर एल 88 एलएलसी–3	दोमट	15 अक्टूबर से 30 नवम्बर	15–20	—	15–20 टन सडी हुई गोबर खाद नत्रजन– 20 फास्पोरस–60 पोटाश–40	—	शुरूआत मे 7–10 सर्दियो मे 25–30 गर्मिया मे –1520	प्रथम 55–60 तत्पश्चात 30–35 दिनों के अतंराल पर	80–120
लोबिया	एन.पी. 3 यू.पी.सी. 5287 बुन्देल लोबिया-2,3	दोमट, बलुई, दोमट	वर्षा आरम्भ	40–45	25–30	नत्रजन–20 फास्फेट– 50	—	10–15	60–70	250–300
ग्वार	एच.एफ.जी.–119 बुन्देल ग्वार 1,2	दोमट, बलुई दोमट	वर्षा आरम्भ	35–40	25–30	नत्रजन– 15 फास्फेट– 30	—	15–20	60–65	200–250
बाजरा	राज बाजरा चरी – 2 जाइन्ट बाजरा ए.वी.के.बी. – 2	दोमट, बलुई दोमट	वर्षा आरम्भ	10–12	25–30	नत्रजन– 40 फास्फेट– 20	नत्रजन– 20 (5 सप्ताह बाद)	20–25	55–60	300–350
ज्वार (चरी)	एम.पी. चरी एस एस जी–53(3)	दोमट, मटीयार दोमट	वर्षा आरम्भ	30–40	25–30	नत्रजन–40 फास्फेट– 20	नत्रजन– 20 (5 सप्ताह बाद)	15–20	60–75	300–400
मक्का	अफ्रीकन टाल जे.1006	दोमट, बलुई दोमट	वर्षा आरम्भ	55–60	25–30	नत्रजन– 50 फास्फेट– 25	नत्रजन– 25 (5 सप्ताह बाद)	15–20	70–75	300–350
जई	एच.एफ ओ केन्ट ओस6	दोमट, बलुई, दोमट	15 अक्टूबर से 15 नवम्बर	80–100	25–30	नत्रजन– 40 फास्फेट– 40	नत्रजन– 20 (5 सप्ताह बाद)	20–25	पहली कटाई 50–55 तत्पश्चात 40–45	300–350

पशुपालक भाई जुलाई माह में क्या करें

- माह के मध्य तक भैंसों का ब्याने शुरू हो जाता है इसलिए ब्याने वाले पशु का विशेष ध्यान रखें।
- गाय व भैंस का बच्चा पैदा होते ही बच्चे की नाल को 1.5 से 2.0 इंच पर धागे से बांध, नये ब्लेड से काट कर टिंचर आयोडीन लगायें।
- पशु ब्याने के दो घंटे तक बच्चों को खींस अवश्य पिलायें।
- अधिक दूध देने वाले पशुओं के ब्याने के 7–8 दिन तक दुग्ध ज्वर (मिल्क फिवर) होने की सम्भावना अधिक होती है इसलिए पशु को कैल्शियम फास्फोरस का घोल 70 से 100 ग्राम प्रतिदिन पिलायें तथा 8–10 दिन तक पूरा दूध निकालें।
- पशुओं में पेट के कीड़ों की रोकथाम करने के लिए बच्चा पैदा होने के 7 दिन, 25 दिन, 3 माह और 6 माह के अन्तराल पर कृमिनाशक दवाई की खुराक पशु चिकित्सक की सलाह के अनुसार दें और इसके बाद प्रत्येक 4 माह के अंतराल पर देते रहें।
- चारे के लिए मक्का की दूसरी फसल बोने का उचित समय है। बीज की मात्रा प्रति एकड 30 किलोग्राम प्रयोग करनी चाहिए।
- सन्तुलित पशु–चारे के लिए मक्का, ज्वार बाजरे की लोबिया व ग्वार के साथ मिला कर बिजाई करें पशुओं को सन्तुलित चारा खिलाने से पशु के शरीर का समय पर विकास और दुग्ध उत्पादन में वृद्धि होती है।

कुक्कट पालन

- मुर्गीखाने को नमी तथा सीलन से बचायें।
- मुर्गीखाने मे उचित प्रकाश की व्यवस्था करे।
- मुर्गीखाने एवं प्रयोग किये जाने वाले बर्तनों की धूल व गंदगी की प्रतिदिन सफाई करें।
- अण्डे व मीट के लिए उपयुक्त प्रजातियों का चयन करें।

संरक्षक
निदेशक, पशुपालन विभाग
●
मुख्य सम्पादक
डॉ. प्रकाश चन्द्र भाटी
अतिरिक्त निदेशक
●
डॉ. राजेश वर्मा
उप निदेशक
विस्तार एवं जनसम्पर्क प्रकोष्ठ
निदेशालय पशुपालन विभाग, जयपुर

प्रकाशक : निदेशक पशुपालन विभाग, पशुधन भवन, गाँधी नगर मोड़, टोंक रोड़, जयपुर, राजस्थान
दूरभाष : 0141-2743331
आपके अमूल्य सुझावों की प्रतीक्षा में
ईमेल : director.ahd@rajasthan.gov.in
ddextension@yahoo.com

Created by Design 9460386634